फिरोज़बेग मिर्ज़ा
गोधरा, (गुजरात)

अमीर खूसरो : एक परिचय

'अमीर खूसरो' का जन्म १२५३ ई.में एटा (उत्तर प्रदेश) सैफुद्दीन और दौलत नाज़ नामक दंपती के घर हुआ था । उनके पिता लाचन जाति के तुर्क मुसलमान थे जो आततायियों के आक्रमण से बचते - बचाते भारत में शरणार्थी के रूप में आये थे और यहीं के होकर रह गये । उन्होंने 'दौलत नाज़' नामक युवती से निकाह किया था । नाज़ के पिता इमादुल्मुल्क मूलत : हिन्दू राजपूत थे और बाद में इस्लाम धर्म स्वीकार लिया था । खूसरों के जन्म के बाद उनका ननीहाल में जाना रहता था और वहां हिन्दू परंपरायें ज्यों की त्यों बनी हुयी थी । इस वातावरण ने खूसरो को प्रभावित किया । नाच - गाना, बजाना और संगीत की महफिलों ने खूसरो को संगीत के प्रति आकर्षित किया ।

खूसरो के पिता व नाना महान संत हजरत निज़ामुद्दीन औलिया के मुरीद (शिष्य) थे । निज़ामुद्दीन औलिया सूफी संप्रदाय के चिश्तिया परंपरा को मानने वाले थे । सूफी मत इस्लाम का एक रहस्यवादी पंथ है जिसमें अल्लाह की इबादत प्रेमी और प्रेमिका के रूप में करते हैं । इस संप्रदाय के मूल इस्लाम के अस्तित्व से पहले से है । इनका उद्देश्य मानवता की सेवा रहा है । इस्लाम के उदय से कुरआन और हदिस के उजाले में दीन (धर्म) को देखा जाने लगा । इस स्थिति में रहस्यवाद, प्रेमी-प्रेमिका के रूप में इबादत, नाच-गाना, संगीत आदि का कोई स्थान नहीं था । अल्लाह ही सर्वोपरी है और उसी की इबादत नमाज़ के द्वारा की जा सकती है अन्य संगीत के द्वारा अल्लाह की आराधना आदि इस्लाम में वर्जीत था । ऐसे इस्लामी कानून से सूफि संत परेशान थे वो राज्य द्वारा स्थापित कानून को नहीं मानते थे ।

माना जाता है कि इस्लाम के उदय से पहले हिन्दू बौद्ध साधुओं का आवा-गमन मध्य एशिया में होता रहता था । अत: इस धर्म के कुछ सिद्धांत जैसे गुरू - शिष्य प्रणाली, कथा कहानियों के माध्यम से उपदेश देना, गुरू का सर्वाधिक महत्व, संगीत के माध्यम से ईश्वर की उपासना जैसे कई तथ्य ईस्लाम के उदय से पूर्व और पश्चात् भी बराबर चलते रहे । अत: वेदान्त और सूफ़ी संप्रदाय में बहुत कुछ साम्यता प्राप्त होती है । सूफ़ीयों के भारत में आने से पूर्व ही ये विचारधारा मध्य एशिया में पहूँच चुकी थी और वहां से ईस्लाम का चोला पहनकर वह पुन: भारत में चिश्ती, सुहरवर्दी, कादिरी, शत्तारी, फिरदौसी, नक्शबन्दी जैसे सम्प्रदायों के रूप में स्थापित हो गयी । ये सभी सम्प्रदाय है तो ईस्लाम के अनुयायी किंतु कुरान और हदीस के मामलों में कई स्थानों पर ये उसका अनुसरण आवश्यक नहीं मानते । उनका दृढ विश्वास पीर - मुरीदी में हैं । ये सभी संप्रदाय न तो शीया है और न ही ईस्लाम के पक्के अनुयायी इनके विचार उदारवादी व मानवतावादी रहे हैं ।

ऐसे वातावरण वाले घर में खूसरो का लालन-पालन होने लगा । नाना और पिता दोनों परिवार निज़ामुद्दीन औलिया के मुरीद बन चुके थे । उनसे उन्होंने धर्मदीक्षा ले रखी थी अत: छोटे-से खूसरो ने आठ वर्ष की आयु में ही औलिया का हाथ पकड़ लिया । मशनवी - शैली में काव्य रचना उन्होंने अपने गुरू से ही सीखी । निज़ामुद्दीन औलिया का उन पर इतना जबरदस्त प्रभाव था कि उन्होंने तीन राजवंश गुलाम, खिजली और तुगलक का उत्थान - पतन व ग्यारह सुलतानों को राजगद्दी पर चढ़ते उतरते देखा । किंतु कभी अपनी प्रामाणिकता को नहीं छोड़ी उनका जीवन राज महेल में आश्रित होने के पश्चात् भी सादगी से बनी रही । सादगी से जीवन-यापन के कारण ही वो कभी षड़यंत्रो का शिकार नहीं बने । अपनी पुरी जिंदगी वो संगीत की साधना में लगे रहे । भारतीय वाद्य में मृदंग प्राचीन वाद्य माना जाता है खूसरो ने मृंदग को बीच में से काटकर तबले का आविष्कार किया । साथ ही सितार में भी सुधार किये इस के लिये उन्हें सदा याद किया जायेगा ।

अमीर खूसरो का जीवन सरल था और हृदय श्वेत हिमकण की तरह था यही कारण रहा कि दिल्ली की गद्दी पर सुलतान सल्तनते बदलती रही पर किसी बादशाह ने खूसरो को कभी कुछ नहीं कहा उनको वो ही सम्मान मिला जो नये बादशाह से पूर्व के बादशाह से मिलता । दिल्ली की गद्दी पर जब तुगलक वंश का बादशाह गयासुद्दीन बैठा तो उसने अमीर खूसरो को वही सम्मान दिया जो उससे पूर्व के बादशाहों से उन्हे मिलता था किंतु वो निज़ामुद्दीन औलिया से प्रसन्न नहीं था । एक बार वो दिल्ली से कहीं दूर था और दिल्ली अपनी पूरी फौज के साथ वापीस आ रहा था बीच रास्ते से ही उसने खूसरो को ये संदेश दे भीजवाया कि उसके दिल्ली पर्हुचने से पहले ही वो निज़ामुद्दीन औलिया को कह दे कि वो दिल्ली छोड़कर कहीं और चले जाये । खूसरो ये संदेश अपने गुरू (पीर) को कैसे कह सकते थे वो तो उनके मुरीद थे उनके चाहनेवाले थे । एक ओर बादशाह सलामत का आदेश तो दूसरी ओर अपने पीर की चाहना थी । अत: उन्होंने हिम्मत कर के इस समस्या को निज़ामुद्दीन औलिया के समक्ष रखी । उन्होंने खूसरो को चिंता न करने को कहा और कहा कि 'दिल्ली अभी दूर है' औलिया के मुख से निकले शब्द शत्प्रतिशत सही प्रमाणित हुये । बीच रास्ते में ही गयासुद्दीन तुगलक की मृत्यु हो गयी वो दिल्ली पर्हुच नहीं पाया । तब से 'दिल्ली अभी दूर है' कहावत का प्रचलन हिन्दी में चल पड़ा ।

निज़ामुद्दीन औलिया खूसरो की दूनिया थे । इनके प्रति खूसरो को इतनी मोहब्बत थी कि जब औलिया इस दूनिर्या से पर्दा कर गये तो इस बात को खूसरो सह नहीं पाये । उनके शव को देखकर एकाएक उनके मुख से निकल गया -

''गोरी सोवे सेज पर मुख पर डारे केस ।
चल खुसरो घर आपने सांझ भई चहुं देस ।।''

खूसरो की दूनियाँ अब विरान हो गयी थी । अब सारी मोह माया को छोड़कर खूसरो औलिया के मजार पर जा बैठे । उन्होंने अब ठान लिया था कि अब वो भी अपने गुरू (पीर) के पीछे चल देंगे । हुआ भी कुछ ऐसा ही औलिया के इस दूनियाँ से पर्दा करने के कुछ ही समय में खूसरो भी अपने पीर से जा मिले । उनकी कब्र को औलिया की कब्र के पास ही बनायी गयी जो आज भी वैसे ही बनी हुयी है ।

अमीर खूसरो मूलत: फारसी भाषा के प्रसिध्ध विद्धान थे फिरभी उन्होंने हिन्दवी में रचनाएं करके खड़ी बोली हिन्दी को समृद्ध किया । खूसरो खड़ीबोली हिन्दी के वह पहले विद्धान थे जिन्होंने साफ - सुथरी सुस्पष्ट हिन्दी का प्रयोग किया था जिस कारण उन्हें खड़ीबोली हिन्दी का प्रथम विद्धान माना जाता है । उनके द्वारा लिखा गया हिन्दी का कोई ग्रंथ आज उपलब्ध नहीं है लोकमुख के द्वारा आज उनकी लिखी मुकरियां, पहेलियां, दोसखुने आदि प्रचलित है । फारसी में विद्धता के कारण उन्हें 'हिन्दी की तूती' उपनाम दिया गया था । फारसी में लिखी उनकी रचनाओं को चार भाग में विभाजित किया जा सकता है ।

(१) ऐतिहासिक ग्रंथ : तुगलकनामा, किरानुससादैन आदि
(२) रोमांटिक ग्रंथ : आईन-ए-सिकन्दरी, मजनू-लैला आदि
(३) दीवान ग्रंथ : तुहफ तुम सिगहर, वास्तुलहयात आदि
(४) गद्य रचनाएँ : खालिकबारी, चिश्तान आदि

अमीर खूसरो फारसी भाषा के विद्धान थे किंतु उन्हें हिन्दवी पर अत्यधिक स्नेह था । आज उन्हें उनकी हिन्दी में लिखी रचनाओं के लिये शायद अधिक जाना जाता है । हिन्दी भाषा के प्रति प्रेम के कारण वो स्वयं लिखते हैं - ''मैं हिन्दूस्तान की तूती हूँ । अगर तुम वास्तव में मुझसे जानना चाहते हो तो हिन्दवी में पूछो । मे तुम्हें अनुपम बातें बता सकूंगा ।'' खूसरो ने बोलचाल की हिन्दी का प्रयोग करके ठेठ ग्रामिण जन के हृदय में भी अपना स्थान बना लिया था । उनके काव्य का सहज अद्देश्य मनोरंजन था अत: किसी विदवत् भाषा प्रयोग की अपेक्षा सरल हिन्दी को ही उन्होनें चुना कुछ उदाहरण प्रस्तुत है :

पहेली : ''एक थाल मोती से भरा, सबके सिर पर औंधा धरा ।।
चारों ओर वह थाल फिरे, मोती उससे एक न गिरे ।।''

- आकाश

मुकरी :

मेरा मोसे सिंगार करावत, आगे बैठ के मान बढ़ावत ।।
बासे चिक्कन न कोउ दीसा, ए सखि साजन ना सखि सीसा ।।

-सीसा

दोसखुन : पान सड़ा क्यों ? घोड़ा अड़ा क्यों ?

- फेरा न था

ढकोसला : ''खीर पकाई जतन से चरखा दिया चला ।।
आया कुत्ता खा गया बैठी ढोल बजा ।।''